अचानकमार-अमरकंटक बायोस्फियर रिजर्व में पाये जाने वाले पतंगे

डॉ. एन. रॉयचौधुरी, डॉ. रूबी शर्मा* एवं शशि किरण बर्वे

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

*पूर्व महिला वैज्ञानिक 'बी', अचानकमार-अमरकंटक बायोस्फियर रिजर्व के अन्तर्गत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की परियोजना, उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

पतंगे रात्रिचर रंगबिरंगे आकर्षक जंतु होते हैं । तितलियाँ और पतंगे दोनों 'लेपीडोप्टेरा' वर्ग के प्राणी होते हैं । पतंगों की १.६ लाख से ज़्यादा क़िस्में ज्ञात हैं, जो तितलियों की क़िस्मों से लगभग १० गुना हैं । वैज्ञानिकों ने पतंगों और तितलियों को अलग बतलाने के लिए ठोस अंतर समझने का प्रयत्न किया है लेकिन यह सम्भव नहीं हो पाया है । अंत में यह बात स्पष्ट हुई है कि तितलियाँ वास्तव में रंग-बिरंगे पतंगों का एक वर्ग है जो भिन्न नज़र आने की वजह से एक अलग श्रेणी समझी जाने लगी हैं । अधिकतर पतंगे रात को सक्रीय होते हैं, हालाँकि दिन में सक्रीय पतंगों की भी कई जातियाँ हैं । ये जमीन की सतह के समानान्तर पंख फैलाकर बैठते हैं । ये सामान्यतः दिन में ये तने तथा पत्तियों, पेड़ों की शाखाओंए कमरों तथा छत में छिपकर बैठते हैं तथा रात्रि में जहां प्रकाश होता है वहां पर मिलते हैं। इन्हे एकत्रित करने कि लिये समय -समय पर विभिन्न स्थानों का सर्वे कर लाइटट्रैप की मदद से इन्हे पकड़ा जाता है । एकत्रित नमूनों को प्ररक्षित करके रखा जाता है ।

1. एक्टियास सेलेनी (मूनमॉथ) (हबनर)

फैमिली – सैटरनिडी, स्थिति - सामान्य

विवरण- इसके पंखों की चौड़ाई लगभग ♂ 132 - 166 तथा ♀ 140 - 182 मि. मी. तक होती है । सिर, वक्ष तथा उदर श्वेत रंग का होता है तथा पंखों

चित्र 1. *एक्टियास सेलेनी* (मूनमॉथ)

का रंग हल्का हरा होता है । आगे के पंखों का ऊपरी किनारा गहरे गुलाबी रंग का होता है तथा पंखों के बीच में हल्के पीले रंग की तिरछी खड़ी लाइन होती है । पंख के सेल वाले भाग पर गहरे लाल भूरे रंग का एक गोल निशान होता है तथा पीछे वाला पंख आगे के पंख के समान ही होता है । यह रोशनी की तरफ आकर्षित होती है तथा सामान्य तौर पर फलदार वृक्षों के ऊपर उड़ती पायी जाती है । (चित्र-1)

2. एगाथोडिस ओस्टेन्टेलिस (हबनर)

फैमिली - पायरालिडी

स्थिति - सामान्य

विवरण- इसके पंखों की लम्बाई 26 से 40

मि. मी. तक होती है। यह हल्का पीलापन लिए हुए हल्के गुलाबी रंग का होता है। आगे वाले पंख में ऊपरी किनारा सफेद होता है तथा बीच में एक गुलाबी रंग की तिरछी खड़ी मोटी पट्टी होती है तथा पंख के बाहरी किनारे के पास एक सफेद लाइन से घिरी हुई अर्द्धवृत्तीय आकृति होती है तथा पिछले पंख हल्के पीले रंग के होते हैं। यह भारत में

सभी जगह पाया जाता है। (चित्र-2)

3. एन्थीरा पेफीया (रेशम कीट) (लिन)

फैमिली – सैटरनिडी, स्थिति - सामान्य

चित्र 3 (अ) *एन्थीरा पेफीया* (रेशम कीट) ♀

विवरण- इसके पंखों की चौड़ाई लगभग ♂ 140 - 174 तथा ♀ 150 - 190 मि. मी. तक होती है। यह हल्के पीले भूरे या हल्के लाल भूरे रंग का होता है। इसके पंख में बीच में एक गोल बड़ा पारदर्शी निशान पाया जाता है जो कि हल्की काली व गुलाबी लाइन से घिरा होता है। पंखों के मध्य से बाहर की ओर खड़ी तिरछी गुलाबी रंग की लाइन

चित्र 3 (ब) एन्थीरा *पेफीया* (रेशम कीट) ♂

होती है। (चित्र-3)

4. थरेट्रो ऑलडेन्लेन्डी (फेब)

फैमिली - स्फिन्जिडी

स्थिति - सामान्य

विवरण- इसके पंखों की चौड़ाई लगभग 80 मि.मी. तक होती है। यह स्लेटी भूरे रंग का होता है। उदर के ऊपरी ओर सिल्वर रंग की लाइन होती है तथा किनारे हल्का पीला रंग होता है और अगले पंखों पर भी तिरछी लाइनें होती हैं। पिछले पंखों में

चित्र 4. *थरेट्रो ऑलडेन्लेन्डी*

बाहरी किनारे का भाग हल्का पीला होता है। (चित्र-4)

5. एपिसपेरिस वेरियेलिस (वाकर)

फैमिली - नॉक्टिडी

स्थिति - सामान्य

चित्र 5. *एपिसपेरिस वेरियेलिस*

विवरण

इसके पंखों की चौड़ाई लगभग 50 मि.मी. तक होती है । यह हल्के लाल भूरे रंग का होता है । अगले पंखों में सबबेसल तथा एन्‌अीमीडियल सफेद लाइन होती है । इसके बाद हल्के पीले तथा सफेद रंग के निशान होते हैं तथा बीच में एक गोलाकार घूमी हुई लाइन होती है । एक लहरदार हल्की लाइन ऊपरी किनारे के सफेद निशान तक जाती है । बाहरी किनारे पर सफेद तथा पीले निशान होते हैं । (चित्र-5)

6. साइलोग्रामा मेनीफ्रान (क्रेम)

चित्र 6. *साइलोग्रामा मेनीफ्रान*

फैमिली - स्फिन्जिडी

स्थिति - सामान्य

विवरण

इसके पंखों की चौड़ाई लगभग 80 -122 मि. मी. तक होती है । यह स्लेटी रंग का होता है ।

वक्ष पर कुछ गहरी भूरी लाइनें होती हैं उदर के ऊपर एक गहरी लाइन होती है । अगले पंखों पर गहरी आड़ी-तिरछी लहरदार लाइनें होती हैं । पिछले पंख भूरे रंग के होते हैं । (चित्र-6)

7. यूटेक्टोना मेकेरेलिस वाक

फैमिली - पायरालिडी

स्थिति - सामान्य

चित्र 7. *यूटेक्टोना मेकेरेलिस*

विवरण

इसके पंखों की चौड़ाई लगभग 22 -24 मि.मी. तक होती है । यह हल्के पीले रंग का होता है । पंखों पर हल्की तिरछी लहरदार खड़ी लाइनें होती हैं । बाहरी ओर की लाइन बाहर की ओर झुकी होती है तथा दोनों पंखों में किनारे पर गहरी लाइन होती है । यह सागौन के वनों में पत्तियों के पीछे छिपा हुआ रहता है । (चित्र-7)

8. जायल्यूटस स्टिक्स क्रेम

फैमिली - कोसिडी

स्थिति - सामान्य

विवरण

इसके पंखों की चौड़ाई लगभग ♂ 110 - 130 तथा ♀ 170 - 188 मि.मी. तक होती है । यह

काले सफेद रंग का होता है। सिर, वक्ष तथा उदर में काले घने रोयें होते हैं। उदर के किनारे नीचे की ओर प्रत्येक खण्ड में सफेद रोये भी होते हैं। अग्र पंख काले व सफेद रोयदार तथा जालीनुमा होते हैं। ऊपरी किनारे पर तथा बीच में कुछ काले निशान

होते हैं। पिछले पंख भी जालीदार घुंधले काले रंग के होते हैं। (चित्र-8)

9. एसोटा कैरिकी, फैब (हिप्सा *एल्सीफ्रान)*

फैमिली - हिप्सिडी

स्थिति - सामान्य

विवरण

इसके पंखों की चौड़ाई लगभग ♂ 62 - 67 तथा ♀ 72 - 76 मि. मी. तक होती है। सिर, वक्ष तथा

चित्र 9. *एसोटा कैरिकी*

उदर पीले नारंगी रंग के होते हैं। अगले पंख स्लेटी भूरे रंग के होते हैं। पंख के बीच में एक नारंगी निशान तथा तीन छोटे काले निशान होते हैं तथा बीच में एक सफेद आड़ी लाइन होती है।

पिछले पंख पीले रंग के होते हैं। तीन छोटे काले निशान होते हैं तथा बाहरी किनारे पर काली लाइन होती है। (चित्र-9)

10. सेरुरा लिटराटा वाक

फैमिली - नोटोडोन्टिडी

स्थिति - सामान्य

चित्र 10. *सेरुरा लिटराटा*

विवरण

इसके पंखों की चौड़ाई लगभग ♂ 40 - 70 तथा ♀ 62 - 90 मि. मी. तक होती है। यह सफेद रंग का होता है। सिर, वक्ष तथा उदर में कुछ काले निशान होते हैं। अगले पंख में बेसल एरिया के पास दो लहरदार तथा एक बीच में लहरदार काली लाइन होती है। मध्य में कुछ काले निशान होते हैं। एक अध्याधिक लहरदार लाइन होती है। एक मध्य लाइन मुड़कर एक वलय बनाती है। तीन लाइनें बाहरी किनारे की ओर होती हैं तथा किनारे पर काले बिन्दुओं की श्रेणी होती है। पिछले पंख हल्के भूरे रंग के होते हैं। (चित्र-10)

11. डायफेनिया (ग्लाइफोडस) इंडिका सांड

फैमिली - पायरालिडी

स्थिति - सामान्य

चित्र 11.डायफेनिया (ग्लाइफोडस) *इंडिका*

विवरण

इसके पंखों की चौड़ाई लगभग 24 - 28 मि. मी. तक होती है । सिर तथा वक्ष भूरे रंग का होता है तथा उदर सफेद होता है । उदर के आखिरी दो खण्ड काले होते हैं तथा आखिरी खण्ड में काले घने रोमों का गुच्छा होता है। अगले पंखों में ऊपरी किनारा काला होता है तथा उसके नीचे एक पारदर्शी त्रिकोणनुमा आकृति होती है। पिछले पंख भी सफेद पारदर्शी होते हैं तथा निचला बाहरी किनारे पर काले रंग की पट्टी होती है । (चित्र-11)

12.स्पोलाइडिया (हाइमेनिया) रिकरवेलिस फैब

फैमिली - पायरालिडी

स्थिति - सामान्य

चित्र 12. *स्पोलाइडिया* (हाइमेनिया) *रिकरवेलिस*

विवरण

इसके पंखों की चौड़ाई लगभग 24 मि. मी. तक होती है । यह कत्थे भूरे रंग का होता है । अगले पंख में मध्य में एक काले रंग से घिरा सफेद लम्बा निशान होता है । उसके बाद एक और सफेद निशान होता है इसी तरह पिछले पंख में भी थोड़ा सा चौड़ा सफेद निशान होता है जो कि निचले सिरे पर सकरा होता है । (चित्र-12)

13.हाइपोसिंड्रा टलाका वाक

फैमिली - जियोमेट्रिडी

स्थिति - सामान्य

चित्र 13. *हाइपोसिंड्रा टलाका*

विवरण

इसके पंखों की चौड़ाई लगभग ♂ 44, तथा ♀ 54 - 60 मि. मी. तक होती है । यह स्लेटी भूरे रंग का होता है । अगले पंख का बाहरी ऊपरी किनारा कटावयुक्त होता है । अगले व पिछले दोनों पंखों में दांतेदार हल्की धुंधली दो-दो लाइने होती हैं । (चित्र-13)

14.मरुम्बा (पोलीप्टाइकस) डायरस वाक

फैमिली - स्फिंजिडी

स्थिति - सामान्य

विवरण

इसके पंखों की चौड़ाई लगभग 94 -114 मि. मी. तक होती है। यह हल्के भूरे रंग का होता है। इसके अगले पंखों में कई तिरछी खड़ी लाइने होती हैं। पंख के बाहरी किनारे की ओर वाली

चित्र 14. *मरुम्बा* (पोलीप्टाइकस) *डायरस*

लाइन अत्यधिक मुड़ी हुई तथा अन्दर की ओर झुककर एक लाल निशान को घेरती हुई जुड़ी रहती है। पंख का बाहरी किनारा लहरदार होता है। पिछले पंख लाल भूरे होते हैं तथा अन्दर की ओर एक लाल भूरा निशान होता है। (चित्र-14)

15. थेरेट्रा एलेक्टो एलेक्टो लिन

फैमिली - स्फिंजिडी

स्थिति - सामान्य

चित्र 15. *थेरेट्रा एलेक्टो एलेक्टो*

विवरण

इसके पंखों की चौड़ाई लगभग ♂ 90, तथा ♀ 106 मि. मी. तक होती है। सिर, वक्ष तथा उदर हल्के भूरे रंग के होते हैं उदर के पार्ष्व भाग में पहले खण्ड के पास एक बड़ा काला निशान होता है। अगले पंख हल्के भूरे रंग के होते हैं मध्य के पास एक काला बिन्दुनुमा निशान होता है। छः तिरछी खड़ी घुंधली लाइनें होती हैं जो कि पंख के ऊपरी किनारे से शुरु होकर निचले किनारे के मध्य तक पंहुचती हैं। पिछले पंख गुलाबी रंग के होते हैं तथा अन्दर की ओर काला बड़ा निशान होता है। (चित्र-15)

ड्रैगनफ्लाई', जिन्हें 'चिऊरा' तथा 'व्याध पतंगा' के नाम से भी जाना जाता है, वास्तव में इनका अस्तित्व धरती पर 30 करोड़ साल से भी ज्यादा पुराना माना जाता है और ये विश्व में लगभग हर जगह पाए जाते हैं। गोवा के एक वन्यजीव अभयारण्य में शोधकर्ताओं ने ड्रैगनफ्लाई नामक पतंगे की नई प्रजाति की खोज की है। भारतीय प्राणी वैज्ञानिक सर्वेक्षण, कोलकाता के वैज्ञानिक ने दक्षिणी गोवा स्थित कोल्लम के भगवान महावीर वन्यजीवन अभयारण्य में इडियोनिक्स गोमेंटाकेनसिस नामक प्रजाति की पहचान की है। यह प्रजाति सदाबहार वनों में पाई जाती है। इस वंश की अधिकतर प्रजातियां दक्षिणी भारत से हैं जबकि गोवा से ऐसी दो प्रजातियां हैं। इस वर्ग के पतंगे अपने जीवनचक्र को पूरा करने के लिए पानी पर निर्भर होते हैं। इस तरह पानी की गुणवत्ता प्रजातियों की संरचना को परिभाषित करती है। ड्रैगनफ्लाई की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह अपनी उड़ान की दिशा एकाएक बदल सकता है, सामने से आती किसी भी वस्तु से दुबककर बच सकता है और एक सैकेंड के भी सौवें हिस्से में उड़ान भर सकता है अथवा उड़ान समाप्त कर सकता है। पतंगे मनुष्यों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाते। ये कीटों तथा छोटी मछलियों का भोजन करते हैं।